

14

भौगोलिक पर्यटन (GEOGRAPHICAL FIELD-EXCURSION)

भौगोलिक क्षेत्रकार्य का लक्ष्य एवं उद्देश्य
(Aims and Purpose of Geographical Fieldwork)

क्षेत्र-कार्य तथा क्षेत्रीय भ्रमण सदा ही भूगोल के अभिन्न अंग रहे हैं। विषयगत यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने का यह प्रमुख स्रोत भी है। भूगोल के विद्यार्थियों में अपने आस-पास के स्थलों का अवलोकन कर विश्लेषण की क्षमता का विकास करना आवश्यक होता है।

प्राचीन भूगोल वेत्ताओं ने लिखा है कि "मैंने यात्रायें कीं, मैंने रेखाचित्र बनाये, और तब मैंने वर्णन किया"। यह कथन भूगोल की अध्ययन विधि का स्पष्ट संकेत है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि भूगोलविदों के लिये क्षेत्र विशेष की वस्तुस्थिति की सही जानकारी के लिये यात्रा आवश्यक है। वस्तुतः 'हम जितना ही अवलोकन करेंगे हमारा भौगोलिक ज्ञान उतना ही अधिक होगा।

रेखाचित्रण (sketching) जितना उन्नत सदी में रेटजेल के समय में महत्वपूर्ण था, उतना ही आज भी है किन्तु रेखाचित्र के साथ अपने अवलोकन सम्बन्धी विचार लिख लेने से निष्कर्ष का विश्लेषण करना सरल हो जाता है।

क्षेत्र-कार्य, परिवेश (Environment) के प्राथमिक
फा० 39

अनुभव प्राप्त करने का साधन है। यदि विद्यार्थियों को अपने से ही तथ्यों का पता लगाने के लिये छोड़ दिया जाय तो उनकी भूगोल के प्रति रुचि बढ़ेगी। अध्ययन क्षेत्र का चुनाव कर उसमें भ्रमण करना तथा तथ्यों की खोज कर उनका विश्लेषण करना ही क्षेत्र-कार्य का प्रमुख उद्देश्य तथा सुख है।

पर्यावरण की खोज आदि काल से ही मनुष्य के समक्ष समस्या के रूप में रही है किन्तु खोजी व्यक्तियों, पर्यटकों, यात्रियों, घुमक्कड़ों ने प्रकृति तथा समाज से तादात्म्य स्थापित कर क्षेत्रगत विभिन्नताओं एवं विशेषताओं को लिपि प्रदान किया। भूगोल के अग्रणी भारतीय विद्वानों प्रो० एस० पी० चैटर्जी तथा प्रो० आर० एल० सिंह ने अनेकों बार भौगोलिक संगोष्ठियों तथा अपने शिक्षक-छात्रों के बीच यह दुहराया है कि भूगोल का प्राथमिक प्रयोगात्मक कार्य स्थानीय नदी तट से प्रारम्भ होकर बस्ती या नगर तक समाप्त होना चाहिए। क्षेत्रीय अध्ययन, वस्तुतः विस्तृत परीक्षणों हेतु अवसर प्रदान करते हैं जिनका विद्यार्थियों की क्षमता के अनुसार चुनाव करना भूगोल शिक्षकों का प्रमुख दायित्व होता है। वह ऐसी योजना बनाता है जिससे विद्यार्थियों को ज्ञान के खोज के अवसर मिल सकें।

विद्यार्थियों में अर्न्तनिहित उत्सुकताभाव (curiosity) वस्तुतः क्षेत्र कार्य का आधार होता है तथापि भूगोल के विद्यार्थियों में सही अवलोकन तथा तथ्यों के अंकन के

गुण भी विकसित किए जाने चाहिए ।

भौगोलिक तथ्यों का विवेचन सामान्यतः कठिन होता है, किन्तु अभ्यास तथा अनुभव के आधार पर विद्यार्थी स्वयमेव मिट्टी तथा वनस्पति के सम्बन्धों, अधिवासीय स्थिति तथा कटाव का उच्चावच पर प्रभाव आदि देख सकता है । इस प्रकार अपने ही अनुभवों तथा प्रयोगों से क्षेत्रीय-कार्य का विद्यार्थी अपने क्षेत्र के पर्यावरण के भौतिक तथा मानव पक्षों के सहसम्बन्धों को समझ सकने के योग्य होता है । इससे भौगोलिक ज्ञान के अतिरिक्त बाहरी क्रियाकलाप (outdoor activity) युवकों में अन्तर्निहित खोज तथा चुनौतियों की भावना को जागृत करते हैं । छात्र-छात्राएँ क्षेत्र-भ्रमण में अज्ञात स्थान की खोज-यात्रा (voyage of discovery) में एक प्रकार के रोमांच का अनुभव करते हैं । इससे वे सही मानचित्र-पठन, दिशा-ज्ञान, क्षेत्र की स्थिति का निर्धारण करने के साथ ही अपने को नये वातावरण के साथ समायोजित करने की क्षमता भी विकसित करते हैं । यात्रान्त में, फलतः, उनके मस्तिष्क में अध्ययन क्षेत्र का एक स्पष्ट चित्राका अवश्य ही उभड़ेगा, जिसमें उच्चावच, भौमिकी-भरचना कृषि प्रतिरूप, उद्योगों, गांवों, शहरों के स्थल एवं स्थिति तथा परिवहन-संचार प्रतिरूपों के उत्तरदायी कारकों को समझने का समुचित विवेक होगा । उसके लिये यही चुनौती भी है ।

क्षेत्रीय अध्ययन की महत्ता को दृष्टिगत कर भूगोल के पाठ्यक्रमों में अनिवार्य रूप से शैक्षणिक-पर्यटनों की व्यवस्था की गई है । स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर तक पाठ्यक्रमों में कई छोटे-बड़े क्षेत्र कार्य, क्षेत्र-सर्वेक्षण तथा क्षेत्र परियोजनाओं (Projects) को भारत के सभी विश्वविद्यालयों में समावेश किया गया है ।

क्षेत्रकार्य-तकनीक (Techniques of Fieldwork)

भूगोल की विभिन्न शाखाओं यथा, भौतिक, मानव आदि के सन्दर्भ में अलग-अलग दृष्टिकोण से क्षेत्रीय अध्ययन का कार्यक्रम तैयार किया जाता है और तदनु रूप क्षेत्र का चुनाव भी होता है । यहाँ भू-आकृति तथा मानव

भूगोल सम्बन्धी क्षेत्र-कार्य तकनीक का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है ।

भू-आकृति का अध्ययन : ऐसे भ्रमण का उद्देश्य सिद्धांतों के परीक्षण एवं ऐसे तत्वों की खोज करना है जो भावी विश्लेषण में सहायक हो । क्षेत्र का चुनाव कक्षा में पढ़ाई जाने वाली मिस्य शस्तु से सम्बद्ध हो तथा क्षेत्रकार्य हेतु जाने से पहले कक्षा में प्राध्यापक द्वारा उस क्षेत्र का मानचित्र दिखाना चाहिए, ताकि विद्यार्थी स्थानों के नाम तथा कुछ निश्चित विशेषताओं से अवगत हो सकें ।

क्षेत्र में भूदृश्यों के समुचित रूप से समझ तथा परख लेने के बाद रेखाचित्रों (Sketches) की सहायता से कुछ बातों को अपनी नोट बुक में अंकित किया जाता है । यद्यपि फोटोग्राफ, स्केच का स्थान ले लेते हैं, तथापि एक सरल रेखाचित्र एक बेहतर चित्रात्मक प्रदर्शन होता है । स्केच या भौगोलिक रेखाचित्र बनाने की कला थोड़े अभ्यास से विकसित की जा सकती है ।

भू-आकृति विज्ञान में क्षेत्र-कार्य के अन्तर्गत प्राकृतिक कटाव की प्रक्रिया को स्वतः देखा जा सकता है । एक नदी की सहायक धाराओं सहित कटाव-क्रिया तथा उसके प्रभाव को देखकर कक्षा में पढ़ी गई सम्बन्धित बातों को अधिक अच्छी तरह समझा जा सकता है । एक नदी प्रणाली की सम्पूर्ण विकास का, विभिन्न अवस्थाओं में ज्ञान प्राप्त करने के लिये, उसे ऊपरी तथा निचले प्रदेशों में विभक्त कर, अलग-अलग टोलियों द्वारा सर्वेक्षण किया जा सकता है । नदी के मोड़ों (मियाण्डर) तथा उसके बाढ़-मैदान का भी देखकर अनुमान लगाया जा सकता है । यथास्थान गार्ज, जलप्रपात तथा अन्तर संबंधित स्कंधों (inter-locking spurs) की विशेषताओं को रेखाचित्र द्वारा अंकित किया जाता है ।

तटवर्ती भू-दृश्यों के अन्तर्गत समुद्र तट पर लहरों के कार्यों का उल्लेख अधिक महत्वपूर्ण होता है । उच्चपहाड़ी क्षेत्रों में हिमानी-भू-दृश्यों की खोज की जाती है । क्षेत्र में खींचे गये रेखाचित्रों की सहायता से हिम-घर्षण के सिद्धान्त का पूर्ण विश्लेषण हो सकता है ।